शोध मंथन Vol. XVI No.4 Oct.- Dec. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.877 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.101

बिहार का राजनीतिक परिदृश्यः गठबंधन सरकार और प्रशासन की भूमिका

प्राप्तिः 14.12.25
स्वीकृतः 22.12.25

101

डॉ. नरेन्द्र भारती
श्री कृष्ण कॉम्पलेक्स, अहियापुर चौक,
मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत
ईमेलः*narendrabharti.1212@gmail.com*

सारांश

गठबन्धन सरकार की आवश्यकता किसी एक राजनीतिक दल को सरकार गठन के लिए आवश्यक बहुमत नहीं प्राप्त होने की स्थिति में पड़ती है। द्विदलीय या एक दलीय प्रभुत्ववाली राजनीतिक व्यवस्थाओं की तुलना में बहुदलीय व्यवस्था में गठबन्धन सरकार की संभावना अधिक है। संघात्मक व्यवस्थाओं में जनसांख्यिकी विविधता एवं अन्य कारणों से दलों की संख्या में वृद्धि होती है। जिससे दल व्यवस्था में तरलता आती है तथा दलीय प्रतियोगिता का स्वरूप राष्ट्रीय न रहकर राज्य–केन्द्रित हो जाता है। कालक्रम में सुस्थापित राष्ट्रीय दलों के जनाधार का क्षरण होता है। गठबन्धन सरकार की प्रकृति मुख्यतः निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करती है– प्रथम, सदन की दलीय स्थितिः द्वितीय, गठबन्धन में शामिल दलों की आनुपातिक स्थितिः तृतीय, गठबन्धन में शामिल दलों के बीच वैचारिक समानता की स्थिति, तथा चौथा, गठबन्धन का नेतृत्व। प्रस्तुत आलेख बिहार के सन्दर्भ में गठबन्धन सरकार और प्रशासन के आलोचनात्मक मूल्यांकन का एक विनम्र प्रयास है। वस्तुतः गठबन्धन सरकार आदर्श स्थिति नहीं है। विचारधारात्मक अनुरूपता का अभाव तथा सहयोगी घटक दल से जनाधार की प्रतिस्पर्धा स्थिति को जटिल बनाती है। बिहार में 2017 और 2024 में महागठबंधन सरकार की समाप्ति इसी कारण से हुई। 2019 की मोदी सरकार नाममात्र की गठबंधन सरकार थी। लोकसभा चुनाव 2024 में गठित गठबंधन सरकार की प्रकृति 2014 तथा 2019 में गठित सरकारों से भिन्न रही। बिहार विधानसभा चुनाव (2025) में भी गठबंधन की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही। मुख्य रूप से दो बड़े गठबंधन थे– एनडीए और महागठबंधन। इन गठबंधनों में कई दल शामिल थे। गठबंधन में जहां सहयोग और समन्वय की चुनौती थी, वहीं नीतिगत घोषणाओं और पार्टियों के बीच समझौते भी देखने को मिले। इसका प्रभाव प्रशासन पर निःसन्देह पड़ेगा।

मुख्य शब्द

गठबन्धन, दल व्यवस्था, जनसांख्यिकी, प्रशासन, नेतृत्व

प्रस्तावना

गठबन्धन सरकार का तात्पर्य संसदीय शासन प्रणाली में बहुदलीय मन्त्रिपरिषद् है। इसकी आवश्यकता संसद के लोकप्रिय निम्न सदन के लिए संपन्न कराये गए आम चुनाव में किसी एक राजनीतिक दल को सरकार गठन के लिए आवश्यक बहुतम नहीं प्राप्त होने की स्थिति में पड़ती है। द्विदलीय या एक दलीय प्रभुत्ववाली राजनीतिक व्यवस्थाओं की तुलना में बहुदलीय व्यवस्था में गठबन्धन सरकार की संभावना अधिक है। किसी राजनैतिक मुद्दे पर दलों के विभाजन और दल–बदल के कारण भी ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है। किसी विशाल देश में विशेषकर संघात्मक व्यवस्थाओं में जनसांख्यिकी विविधता एवं अन्य कारणों से दलों की संख्या में वृद्धि होती है। जिससे दल व्यवस्था में तरलता आती है तथा दलीय प्रतियोगिता का स्वरूप राष्ट्रीय न रहकर राज्य–केन्द्रित हो जाता है। कालक्रम में सुस्थापित राष्ट्रीय दलों के जनाधार का क्षरण होता है। इस क्षरण की सघनता और मात्रा अलग–अलग राज्यों और अंचलों में अलग–अलग होती है। जिससे राज्य स्तरीय क्षेत्रीय दलों का उदय होता है।

सामान्यतः गठबन्धन सरकार की प्रकृति एकदलीय सरकार से भिन्न होती है। गठबन्धन सरकार की प्रकृति मुख्यतः निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करती है– प्रथम, सदन की दलीय स्थितिः द्वितीय, गठबन्धन में शामिल दलों की आनुपातिक स्थितिः तृतीय, गठबन्धन में शामिल दलों के बीच वैचारिक समानता की स्थिति, तथा चौथा, गठबन्धन का नेतृत्व। सरकार गठन के लिए आवश्यक बहुमत जुटाने के उद्देश्य से जब चुनावपूर्व गठबन्धन किया जाता है, तब स्थिति भिन्न होती है। चुनाव पूर्व गठबन्धन में सीटों के पूर्ण तालमेल का प्रयास किया जाता है, इसमें दोस्ताना संघर्ष की नौबत प्रायः नहीं आती है। बल्कि एक चुनाव घोषणा पत्र भी जारी किया जाता है। जैसाकि 1999 में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन द्वारा शासन की राष्ट्रीय कार्यसूची (नेशनल एजेंडा फॉर गवर्नेंस) जारी की गयी थी।[1] इसके पूर्व 1989 में राष्ट्रीय मोर्चा ने संयुक्त चुनाव घोषणा पत्र जारी किया था। राष्ट्रीय मोर्चा में जनता दल के अतिरिक्त तेलगू देशम पार्टी, असम गण परिषद् तथा द्रविड़ मुनैत्र कड़गम आदि शामिल थे। नेशनल फ्रंट के संयोजक टी.डी.पी. नेता एन.टी. रामाराव थे तथा एन.डी.ए. के संयोजक तत्कालीन समता पार्टी नेता जार्ज फर्नांडीस थे। यूनाइटेड फ्रंट (1996–98) के संयोजन चन्द्रबाबू नायडू थे।

वस्तुतः भारत में राष्ट्रीय स्तर पर पहली गठबन्धन सरकार 1977 में जनता पार्टी की मोरारजी देसाई के नेतृत्व में बनी थी, जिसमें अकाली दल भी शामिल था। 1979 में चरण सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस (एस) के साथ अल्पकालिक सरकार गठित हुई थी। 1989 में विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में गठित राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के बाद 1996–98 के बीच संयुक्त मोर्चा (यूनाइटेड फ्रंट) के द्वारा जनता दल के एच.डी. दैवगोड़ा तथा इन्द्र कुमार गुजराल के नेतृत्व में 13 दलों का, जिसे कांग्रेस का बाहर से समर्थन प्राप्त था, दो गठबन्धन सरकारें गठित हुईं। 1998–2004 के दौरान अटल बिहार वाजपेयी के नेतृत्व में एन.डी.ए. की गठबन्धन सरकार रही। अपना कार्यकाल पूरा करनेवाले गठबन्धन सरकार के पहले प्रधानमंत्री अटल बिहार वाजपेयी रहे, यद्यपि उन्होंने भी समयपूर्व आम चुनाव करा अपना कार्यकाल छोटा कर लिया।[2] वर्ष 2004 से 2014 तक कांग्रेस के नेतृत्व में संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन (यूनाइटेड प्रोग्रेसिव एलांएस–यू.पी.ए.) की सरकार रही। यू.पी.ए. की अध्यक्ष

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.101

कांग्रेस की अध्यक्ष सोनिया गाँधी रहीं, जिनके द्वारा मनोनीत काँग्रेस के ही राज्यसभा में नेता मनमोहन सिंह दस वर्षों तक प्रधानमंत्री रहे।

यों तो 2014, 2019 तथा 2024 में भी भारतीय जनता पार्टी में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गठित सरकारों में अन्य दलों का प्रतिनिधित्व रहा तथा तकनीकि दृष्टि से इन्हें एन.डी.ए. की गठबन्धन सरकार कह सकते हैं। किन्तु 2014 में भाजपा को 282/543 तथा 2019 में 303/542 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत प्राप्त था। 2024 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को सिर्फ 240 सीटें ही प्राप्त हुई और पूर्ण बहुमत प्राप्त करने में असफल रही। जबकि भाजपा के गठबंधन दलों ने 53 सीटें प्राप्त कर सकी। जिनमें अलग–अलग दल जैसे– टीडीपी, जद(यू), शिवसेना और अन्य छोटे दल शामिल थे। इस प्रकार 2024 के लोकसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन को 293 सीटें प्राप्त हुई। 2014 की गठबन्धन सरकार में तेलगू देशम पार्टी (अशोक गजपति राजू तथा श्री चौधरी), शिवसेना (अनंत गीते), लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास), राष्ट्रीय लोक समता पार्टी (उपेन्द्र कुशवाहा), अकाली दल (हरसिमरत कौर बादल), अपना दल (अनुप्रिया पटेल), रिपब्लिकन पार्टी (रामदास आठवले) का प्रतिनिधित्व था। किन्तु 2014 की सरकार एक प्रकार का सरप्लस गठबन्धन की सरकार थी अर्थात् सरकार का अस्तित्व किसी सहयोगी दल पर निर्भर नहीं था। नीति संबंधी प्रश्नों पर किसी दल का निषेधाधिकार (वीटो) प्राप्त नहीं था।

इसी प्रकार 2019 की मोदी सरकार भी नाममात्र की गठबन्धन सरकार थी। जिसमें अकाली दल, शिवसेना, लोक जनशक्ति पार्टी, रिपब्लिक पार्टी (आठवले) को सांकेतिक प्रतिनिधित्व दिया गया। इसी कारण जनता दल (यूनाइटेड) ने मन्त्रिपरिषद् में सम्मिलित होने का आग्रह अस्वीकार कर दिया। बिहार से 16 लोकसभा तथा छह राज्यसभा सदस्यों वाले जनता दल (यूनाइटेड) ने सरकार में भागीदारी के लिए आनुपातिक प्रतिनिधित्व की मांग रखी थी। इसके बाद जे.डी.यू. ने एन.डी.ए. में बने रहने तथा सरकार के साथ दृढ़ता से खड़े रहने की घोषणा की।

प्रस्तुत आलेख बिहार के सन्दर्भ में गठबन्धन सरकार और प्रशासन के आलोचनात्मक मूल्यांकन का एक विनम्र प्रयास है। उत्तर भारत के अन्य राज्यों की भांति बिहार में भी गठबन्धन सरकारों की शुरूआत 1967 से मानी जाती है, जब डॉ. राम मनोहर लोहिया के प्रयासों से विपरीत वैचारिक ध्रुवों पर अवस्थित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई.) तथा भारतीय जनसंघ ने संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी, स्वतन्त्र पार्टी तथा विक्षुब्ध कांग्रेस जनों द्वारा गठित जनक्रान्ति दल के साथ मिलकर महामाया प्रसाद सिन्हा के नेतृत्व में बिहार की पहली गठबन्धन सरकार बनाई। कई राज्यों में कांग्रेस का विभाजन हुआ– भारतीय क्रांति दल (उत्तर प्रदेश), उत्कल कॉंगेस, बंगला कांग्रेस, केरल कांग्रेस, विशाल हरियाणा पार्टी आदि। बिहार में 1967–72 गठबन्धन सरकारों का दौर रहा।

भारतीय राजनीति की इस नवीन परिघटना ने संसदीय राजनीति और दल व्यवस्था के अध्येताओं का ध्यान आकृष्ट किया था। संस्थात्मक और व्यवहारवादी पद्धतियों के प्रयोग द्वारा अनेकानेक अध्ययन प्रकाशित हुए, जिनमें इस परिघटना की व्याख्या और विश्लेषण किया गया। नवीन सिद्धान्त निर्माण की दिशा में कुछ सार्थक सामान्यीकरण भी सामने आए।

परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर कॉंग्रेस की प्रभुत्वशील स्थिति से पतन द्वारा भारतीय राजनीति में नये अध्याय की शुरूआत हुई। 1989, 1991, 1996, 1998, 1999, 2004 तथा 2024 के लोकसभा चुनावों में

किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ। 1977 में द्विदलीय व्यवस्था (कांग्रेस और जनता पार्टी) की जो संभावना मायरन वीनर को दिखी थी[3] वह भी जनता पार्टी के बिखराव तथा कांगेस के विभाजन (कांग्रेस–इंदिरा का गठन) से तिरोहित हो गयी।[4] 1980 के दशक में असम, आन्ध्रप्रदेश, जम्मू–कश्मीर में क्षेत्रीय दलों के उदय तथा पं. बंगाल, कर्नाटक में गैर काँग्रेस दलों की सशक्त ने दल व्यवस्था का स्वरूप परिवर्तित किया। दल व्यवस्था का क्षेत्रीयकरण हुआ। राज्य दलीय चुनावी प्रतियोगिता के पृथक अखाड़े बन गये। राष्ट्रीय राजनीति इन्हीं राज्य स्तरीय राजनीति के परिणामों से स्वरूप ग्रहण करने लगी। इसी दौर में राष्ट्रीय स्तर पर गठबन्धन या अल्पमत सरकार (1991–1996) का दौर चला।[5]

उल्लेखनीय है कि 2014 और 2019 में भले ही एन.डी.ए. की गठबन्धन सरकारें बनीं परन्तु इनकी प्रकृति एक दलीय सरकार की रही। वहीं 2024 में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गठित सरकार में अन्य दलों का प्रतिनिधित्व रहा तथा तकनीकि दृष्टि से इन्हें एन.डी.ए. की गठबंधन सरकार कह सकते हैं।

जहाँ तक बिहार का प्रश्न है तो 21वीं सदी इस राज्य के लिए गठबन्धन सरकारों का काल रहा है। वर्ष 2000 में नीतीश कुमार की पहली सरकार समता पार्टी, जनता दल (यू) तथा भाजपा की गठबन्धन सरकार थी। जिसने अपेक्षित बहुमत जुटा पाने में विफल रहने पर एक सप्ताह में इस्तीफा दिया था। बिहार विधानसभा अध्यक्ष पद पर इसके उम्मीदवार गजेन्द्र प्रसाद हिमांशु कांग्रेस के सदानन्द सिंह से पराजित हो गये थे। तब राष्ट्रीय जनता दल की राबड़ी देवी के नेतृत्व में राजद, काँग्रेस, क्रांतिकारी साम्यवादी पार्टी, यू.जी.डी.पी. आदि की गठबंधन सरकार बनी। किन्तु नवम्बर 2000 में बिहार विभाजन (झारखंड राज्य के गठन) के बाद विधानसभा का स्वरूप बदल गया। 324 के बदले 243 सदस्यीय विधानसभा में अन्य दलों पर राजद की निर्भरता कम हो गयी। कांग्रेस के प्रायः सभी विधायक मंत्रिपरिषद् में शामिल थे पर 2001 में 91वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा मन्त्रिपरिषद् की सदस्य संख्या 15 प्रतिशत अर्थात् 36 तय कर दी गयी। राबड़ी देवी की पुनर्गठित गठबन्धन सरकार में राजद और काँग्रेस शामिल थी, पर जनस्मृति और लोक छवि राजद सरकार ही रही।[6] इसका कारण काँग्रेस केन्द्रीय नेतृत्व का दृष्टिकोण था, जिसने बिहार में द्वितीय भूमिका को ही राष्ट्रीय सन्दर्भ में संभावनापूर्ण माना था। 2004 में यू.पी.ए. सरकार के गठन में राजद 24 लोकसभा सदस्यों के साथ प्रमुख घटक की भूमिका में थी।[7]

सच्चे अर्थों में स्थिर गठबन्धन सरकार की शुरूआत बिहार में 2005 में हुई। फरवरी–मार्च 2005 के चुनावों में किसी दल या चुनाव पूर्व गठबंधन को बहुमत नही मिला। चुनाव परिणाम इस प्रकार थाः राजद 75, काँग्रेस 10, जद(यू) 55, भाजपा 37, लोजपा 29, सी.पी.आई. तीन, सी.पी.एम. एक, सी.पी.एम.एल सात, बसपा चार, सपा दो तथा निर्दलीय 17।

परिणामस्वरूप किसी मंत्रिपरिषद् का गठन नहीं हो सका। लोजपा विधायकों ने जब विद्रोह कर जद(यू)–भाजपा को समर्थन देना चाहा, तत्क्षण राज्यपाल बूटा सिंह ने विधानसभा भंग करा दी जिसे सर्वोच्च न्यायालय की संविधान पीठ ने अवैध करार दिया। पर तब तक अक्टूबर–नवम्बर 2005 में पुनः विधानसभा चुनाव संपन्न हुए, जिसमें जद (यू)– भाजपा गठबन्धन को क्रमशः 88 और 55 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ। एन.डी.ए. सरकार नीतीश कुमार के नेतृत्व में गठित हुई, जिसमें भाजपा के सुशील कुमार मोदी उपमुख्यमंत्री बने। मंत्रिपरिषद् में संख्या तथा विभागों का वितरण आनुपातिक आधार पर किया गया। विभाग घटकवार चिन्हित कर दिये गये।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.101

2005 से 2010 तक गठबंधन सरकार सुचारू रूप से चली।[8] प्रशासन के क्षेत्र में इस गठबन्धन सरकार की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ रहीं। पंचायती राज तथा शहरी स्थानीय निकायों में स्त्रियों को 50 प्रतिशत सीटें तथा पद मिलें। अतिपिछड़ी जातियों के लिए भी 20 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया। पूर्व में एकल पदों पर बिहार में आरक्षण लागू नहीं था, इसे बहाल किया गया। 2006 के अधिनियम के अनुसार 2006, 2011, 2016 तथा 2021 में पंचायती राज संस्थाओं का निर्वाचन संपन्न हुआ। इन्हें कार्य सौंपे गये, इनके लिए निधि एवं कार्मिकों की व्यवस्था की गयी। नगरीय निकायों के चुनाव भी 2007, 2012, 2017 तथा 2022 में संपन्न हुए, जिनमें अनुसूचित जाति के अतिरिक्त अतिपिछड़ी जातियों तथा स्त्रियों के आरक्षण के सफल प्रयोग के कारण वंचित तबकों का सशक्तिकरण हुआ। विकेन्द्रित विकास में इनकी सहभागिता बढ़ी।

सड़क, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं को गठबंधन सरकार ने प्राथमिकता दी। सबसे बढ़कर विधि व्यवस्था की स्थिति में सुधार हुआ। परिणामस्वरूप इस गठबन्धन सरकार की स्वीकार्यता बढ़ी। प्रशासन की कार्यकुशलता पर गठबन्धन के कारण किसी प्रकार की बाधा सामने नहीं आयी। इसका कारण था घटक दलों में परस्पर विश्वास तथा समन्वय। 2009 के लोक सभा चुनावों में जद (यू) को 20 तथा भाजपा को 12 सीटें मिली, राजद 22 से चार पर आ गयी। जबकि राष्ट्रीय स्तर पर न केवल यू.पी.ए. सरकार की पुर्नवापसी हुई, बल्कि कॉंग्रेस की संख्या 145 से बढ़कर 206 हो गई थी। गुड गवर्नेंस के लिए गठबन्धन सरकार को सराहना मिल रही थी।

पाँच वर्षों के सफल एवं स्थिर कार्यकाल के बाद 2010 के विधानसभा चुनावों में व्यापक जन समर्थन मिला। 243 में जद (यू) ने 115 तथा भाजपा 91 सीटें प्राप्त की। राजद 54 सीटों से 22 पर आ गयी। 2010 की गठबन्धन सरकार में भी मन्त्रिपरिषद् का गठन तथा विभागों का वितरण पूर्व के फार्मूले के अनुसार हुआ। दोनों घटक दलों में किसी प्रकार का विवाद सार्वजनिक नहीं हुआ। जद (यू) तथा समता पार्टी भाजपा की सहयोगी क्रमशः 1996 तथा 1999 से थी।[9] राष्ट्रीय स्तर पर कुछ बिन्दुओं पर वैचारिक मतभेद को हाशिये पर रखकर सरकार चलाने में सफलता पायी।

बिहार विधानसभा 2010 के चुनावों के पूर्व एक विवाद सामने आया था, जब भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की पटना बैठक के अवसर पर आयोजित रात्रिभोज जद (यू) द्वारा रद्द कर दिया गया था।

प्रशासनिक स्तर पर किये गये प्रयत्नों का परिणाम सेवा प्रदायन में मात्रा और गुणवत्ता की वृद्धि के रूप में सामने आया। परन्तु जद (यू) बिहार में क्रमशः नेतृत्व–केन्द्रित तथा नीतीश कुमार के व्यक्तित्व पर आधारित होने लगी। यू.पी.ए., विशेषकर कांग्रेस तथा राजद के बदले जद (यू) से सहयोग के संकेतों से भ्रम उत्पन्न हुआ। 2009–2014 के दौरान गठबन्धन की सरकार की प्रशंसा केन्द्रीय मन्त्रालय द्वारा की जाने लगी। किन्तु, तीव्र विकास दर के बावजूद सकल राज्य घरेलू उत्पाद और अन्य संकेतकों की दृष्टि से बिहार का पिछड़ापन तभी दूर किया जा सकता है, जब इसे विशेष दर्जा मिले, ऐसी मांग तीव्रता से जद (यू) द्वारा की जाने लगी। बिहार अस्मिता, उपराष्ट्रवाद जैसे तत्वों को रेखांकित किया जाने लगा। इसके बावजूद जद (यू)–भाजपा गठबन्धन 2013 के मध्य तक बिहार में सफल कही जा सकती है। भाजपा द्वारा 2014 लोकसभा चुनाव के पूर्व राष्ट्रीय अभियान समिति का प्रमुख नरेन्द्र मोदी को बनाया गया, फिर उन्हें प्रधानमन्त्री उम्मीदवार भी घोषित किया गया। जद (यू) इसी मुद्दे पर एन.डी.ए. से अलग

हो गयी। 243 के सदन में इसके 115 सदस्य थे। मई 2014 तक जद (यू) की ही सरकार रही। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने पर नीतीश कुमार ने पद त्याग कर जीतनराम मांझी को मुख्यमंत्री बनाया। फिर फरवरी 2015 में नीतीश कुमार मुख्यमन्त्री बने। मांझी ने जद (यू) में फूट डलवायी तथा नीतीश कुमार की सरकार अन्य दलों के बाहरी समर्थन से नवम्बर 2015 तक चली।

2015 के विधानसभा चुनाव में जद (यू) ने राजद तथा काँग्रेस से महागठबन्धन बनाकर भाग लिया। दूसरी ओर भाजपा ने लोजपा, रालोसपा तथा हम के साथ गठबन्धन बनाया। जद (यू) 71, राजद 80,कांग्रेस 27, भाजपा 53, लोजपा 2, रालोसपा 2, हम 1 सीट पर विजयी हुई। महागठबन्धन 178 तथा एनडीए 58 सीटें प्राप्त कर सकी। महागठबंधन की सरकार का कार्यकाल नवम्बर 2015 से जुलाई 2017 तक रहा। इसमें नीतीश कुमार मुख्यमन्त्री, तेजस्वी यादव उपमुख्यमन्त्री रहे। मन्त्रिपरिषद् में आनुपातिक भागीदारी रही तथा विभागों का वितरण सर्वमान्य फार्मूले के तहत हुआ। प्रांरभ में गठबन्धन सरकार का कार्यकाल सन्तोषप्रद रहा। किन्तु शीघ्र ही राजद द्वारा प्रशासन के विभिन्न स्तरों पर हस्तक्षेप, नियुक्ति पदस्थापना में पक्षपात की शिकायतें आने लगीं। इस गठबन्धन सरकार ने शराबबन्दी लागू की, जिसे क्रियान्वित कराना प्रशासन के लिए निरन्तर चुनौतीपूर्ण रहा।

जुलाई 2017 में जद (यू) ने महागठबन्धन से पृथक होकर भाजपा के साथ गठबन्धन सरकार का निर्माण किया। जो अगस्त 2022 तक जारी रहा। अगस्त 2022 में नीतीश कुमार द्वारा फिर से एक बार गठबंधन को छोड़कर दूसरे गठबंधन को स्वीकार किया गया। वे आठवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री बने। गठबंधन टूटने के मामले पर नीतीश कुमार द्वारा कहा गया कि बीजेपी ने हमें खत्म करने की साजिश रची, हमेशा अपमानित करने का प्रयास किया इस कारण से वह भाजपा से अलग हो गए। बिहार में 2022 के बाद महागठबंधन की सरकार सिर्फ 17 महीनों तक ही सत्ता में रही। महागठबंधन में आपसी मतभेद के कारण नीतीश कुमार ने एक बार फिर से बाजी पलटते हुए जनवरी 2024 को जद(यू)–भाजपा (एनडीए) की नई सरकार का गठन किया। इस प्रकार, नीतीश कुमार बीते 20 वर्षों में नौंवी बार राज्य के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली। सरकार के विभागों का वितरण तथा मंत्रिमंडल में हिस्सेदारी सदन में संख्या तथा पूर्व के फार्मूले के अनुसार किया गया है। 2024 के लोकसभा चुनाव में जद (यू), भाजपा, लोजपा (रामविलास), हम (सेक्युलर), एन.डी.ए. का हिस्सा रही।

2025 के विधानसभा चुनाव में जद(यू) ने बीजेपी, लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास), हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा (सेक्युलर) तथा राष्ट्रीय लोक मोर्चा से महागठबंधन बनाकर भाग लिया। दूसरी ओर राजद ने कांग्रेस, सी.पी.आई. (एम.एल.)(एल.), इंडियन इन्क्लूसिव पार्टी तथा सीपीआई (एम) के साथ गठबंधन बनाया। बीजेपी 89, जद(यू) 85, राजद 25, लोजपा (रामविलास) 19, कांग्रेस 6, ए.आई. एम.आई.एम. 5, हम (सेक्युलर) 5, रालोमा 4, सीपीआई (एमएल) (एल) 2, आइ.आई.पी. 1, सीपीआई (एम) 1, बसपा 1 सीट पर विजय हुई। एनडीए 202 तथा महागठबंधन 35 सीटें प्राप्त कर सकी।[10]

इस प्रकार, भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने राष्ट्रीय जनता दल के नेतृत्व वाले महागठबंधन को हराकर शानदार जीत हासिल की। एन.डी.ए. सरकार नीतीश कुमार के नेतृत्व में गठित हुई, जिसमें भाजपा के विजय कुमार सिन्हा और सम्राट चौधरी उपमुख्यमंत्री बने। मंत्रिपरिषद् में संख्या तथा विभागों का वितरण आनुपातिक आधार पर किया गया।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.101

जहाँ तक प्रशासनिक पक्ष का प्रश्न है तो 2005 से 2013 तक का कार्यकाल सचेष्ट प्रयत्नों के कारण उत्कृष्ट कहा जा सकता है। 2013 से 2017 का काल प्रशासनिक पक्ष पर राजनीतिक पक्ष के हावी होने का काल है। 2017 से मई 2019 का काल न्याय के साथ विकास की दिशा में पुर्न प्रयत्न का काल है। 2021 से 2025 का काल विकास परियोजनाएँ, सामाजिक–आर्थिक सुधार के साथ रोजगार की दिशा में नए प्रयत्न का काल है।

निष्कर्षः

वस्तुतः गठबन्धन सरकार आदर्श स्थिति नहीं है। विचारधारात्मक अनुरूपता का अभाव तथा सहयोगी घटक दल से जनाधार की प्रतिस्पर्धा स्थिति को जटिल बनाती है। 2017 और 2024 में महागठबन्धन सरकार की समाप्ति इसी कारण से हुई। आज 2025 में एनडीए के बढ़ते जनसमर्थन और नीतीश कुमार के नेतृत्व के कारण महागठबंधन असहज स्थिति में प्रतीत हो रही है। इसका प्रभाव बिहार की राजनीति एवं प्रशासन पर निःसन्देह पड़ेगा।

संदर्भ

1. Sridharan, Eswaran "Coalition strategies and the BJP's Expansion, 1989-2004", Common Wealth and Comparative Politics, no. 2 (2005), 194-221.
2. Sridharan, Eswaran, Coalitions and Party Strategies in India's Parliamentary Federation. Publics: The Journal of Federalism, 33, no. 4 (2003) 135-152.
3. Weiner, Myron, "The 1977 Parliamentary Elections in India", Asian Survey, 17, no. 7, (1977) 619-626.
4. Weiner, Myron, India at the Polls: The Parliamentary Elections of 1977, American Enterprises Institute of Public Policy Research, Washington, D.C., 1978, 107-111.
5. Adeney, Katharime and Lawrence Saez (eds.), Coalition Politics and Hindu Nationalism, Routledge, Oxon, 2005.
6. Ojha, Anil Kumar, "Congress in Bihar Politics: Form Dominance to Marginality", Studies in Humanities and Social Services, Indian Institute of Advance Study, Shimla, Vol. X, No. 1, Summer 2003, 107-115.
7. Ojha, Anil Kumar, "Alliances, Castes and Personalities: 14th Lok Sabha Elections in Bihar." Indian Journal of Political Science, Vol LXVII, No.4, October-December, 2006 717-732.
8. Kumari Saroj, "Regional Parties in Bihar Politics in N.P.Choudhary and Anil Kumar Ojha (eds.) Indian Democracy: Contemporary Challenges, Shipra Publications, New Delhi, 2013, 240-257.
9. Ojha, Anil Kumar and MR Kazimi, "Bipolar Competition and the 13th LoK Sabha Elections in Bihar" in Paul Wallance and Samashray Roy (eds.) India's 1999 Elections and 20th Century Politics, Sage Publications, New Delhi, 2003, 311-331.
10. www.eci.gov.in